॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

रुक्मिणीसत्यभामाव्रजस्त्रीविशिष्टः श्रीभगवान
पुरुषोत्तमो वासुदेवः साम्प्रदायिभिर्वैष्णवैः सदोपासनीय

सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरु
भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीनिम्बार्काब्द 5116- 5117 वि० सं० 2078 ईस्वी 2021 – 2022 का

श्रीसूर्यसिद्धान्तीय गणना आधारित श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा स्वीकृत कपालवेध सिद्ध

"श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय"

****

प्रकाशन तिथि
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
संवत् 2078

प्रकाशक
श्रीनिम्बार्कपरिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारीजी
गढ़ के सामने, कलवाड़ा,
जयपुर राजस्थान – 302037

स्थान जयपुर
प्रथमावृत्ति 1000
न्यौछावर सदुपयोग

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

"येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिर्देहश्चैकः क्रीड़ानार्थं द्विधाभूत्"

ठाकुरजी श्रीसरसबिहारी जी

****
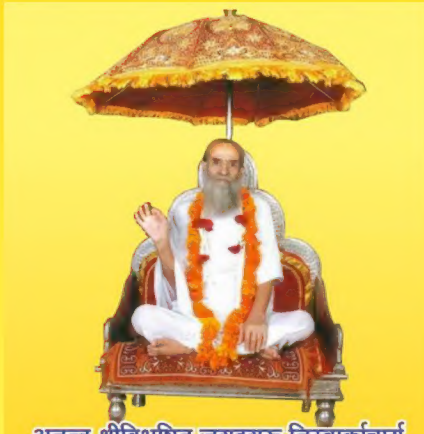
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

शुभेच्छा

मनुष्य प्रायः अपने दैनिक कार्य नियमित करता है, निन्द्रा और भोजन में तो वह कड़ा नियम रखता हैं, किन्तु भजन में उसकी नियमितता ना जाने कहाँ तिरोहित हो जाती है भजन किये बिना खाने वाला पाप खाता है। मनुष्य जितनी देखभाल अपने कपड़ों की करता हैं यदि उतनी ही देखभाल अपने मन की भी करे तो वह मलिन नहीं हो पाये। सत्कर्म में नियमितता होनी चाहिये नियमित सत्कर्म करने वाला ही साधक है। व्रतोपवास रुपी सत्कर्म सभी को निरन्तर अवश्य ही करना चाहिये। व्रतोपवास नियत पर्व तथा नियत समय पर किये हुए ही फलीभूत होते हैं। व्रतोपवास के नियम तथा विधि का निर्णय शास्त्रों में वर्णित हैं किन्तु वह सभी साधकों को सहज उपलब्ध हो और वे अपने व्रतोपवास रुपी सत्कर्मों का सरलता से पालन कर सकें इसीको ध्यान में रखते हुए श्रीनिम्बार्क परिषद् जयपुर राजस्थान द्वारा प्रकाशित श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय सम्प्रदाय के सभी सुधी सज्जन साधु सन्तों को अवश्य ही लाभ पहुँचायेगा इस विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। श्रीनिम्बार्क परिषद् के इस पवित्र कार्य के लिए मैं अपनी अनादि वैदिक परम्परा के प्रवर्तक आचार्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् के चरण कमलों में आशीर्वाद और शुभेच्छा की प्रार्थना करता हूँ। हमारे पूज्य श्रीवैकुण्ठ प्राप्त श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज जी के चरण कमलों में बारम्बार दण्डवत नमन करता हुआ श्रीसर्वेश्वर भगवान् से भी मंगल प्रार्थना करता हूँ।

श्रीवृन्दावन बिहारी दास जी काठिया बाबा
सुखचर, पश्चिम बंगाल

"धावन् निमिल्य वा नेत्रे , न स्खलेन्न पते देहि ॥"

अर्थात वैष्णवधर्म भागवतधर्म पर चलने वाले का कभी भी, किसी भी देश, काल, परिस्थिति में पतन नहीं होता है।

सहज जिज्ञासा होती हैं वैष्णव धर्म क्या हैं ? श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीभगवत- - पुरषोत्तमाचार्य जी महाराज अपने ग्रन्थ वेदान्तरत्न- मञ्जूषा के तृतीय कोष्ठ में सर्व शास्त्र प्रामाण्य स्वरुप वैष्णवलक्षण बताते हुये निबद्ध करतें हैं कि —

"वैष्णव धर्म हैं करुणावरुणालय भगवान श्रीवासुदेव केश्रीचरणों में आत्मभार निवेदित कर भगवदाज्ञा अनुरूप जीवन व्यतीत करना । श्रुति - स्मृति एवं सदाचार की परम्परा से चली आई भगवदाज्ञा का जो स्वेच्छया सेउल्लंघन कर कूटयुक्तियों से उसे उचित बताते हैं वे मूर्ख- दुःशील-नराधम नरक को जाते हैं"

अतः श्रुति – स्मृति सदाचार की भगवदाज्ञा का सम्यक परिपालन हो - इसके लिए श्रीनिम्बार्क परिषद् ने यह"श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय" प्रकाशित करके स्तुत्य कार्य किया हैं । इसमें सम्मिलित विशिष्ट विवरणों से यह अत्यन्त संग्रहणीय बन पड़ा है । श्रीसर्वेश्वर प्रभु श्रीनिम्बार्क परिषद् को सामर्थ्य प्रदान करें की यह सम्प्रदाय के सिद्धान्त परक साहित्य को सहज सुबोध रूप में वैष्णव जगत में प्रस्तुत करें।

महन्त श्रीबनवारी शरण
श्रीगोपालजी का मन्दिर, जूसरी मकराना
प्रन्यासी अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ

नियमेन यदानन्दो जगाद्भासयतेऽखिलम्।
तमहं नियमानन्दं वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम्॥

अनादि वैदिक सनातन वैष्णव संस्कृति में व्रतादि नियमों की प्राचीन परम्परा रही है। जो अद्यतन अविच्छिन्न रूप से परिपालित है। शास्त्रोक्त व्रतादि का शास्त्रोक्त रीती से परिपालन ही श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय में इष्ट है। आद्याचार्य श्रीनिम्बार्काचार्य प्रभु ने ब्रह्मसूत्रादि ग्रन्थों के भाष्य तथा सदाचार-प्रकाश आदि ग्रन्थों में इस शास्त्रविधि का वर्णन विशद रूप से किया है, जिसका उल्लेख परवर्ती आचार्यों ने अपने अपने ग्रन्थों में किया है। श्रीनिम्बार्काचार्य ने शास्त्र प्रतिपादित व्रतादि में कपाल वेध अर्थात् अर्धरात्र पर तिथि का उदयकाल स्वीकार किया है यही सम्प्रदाय में विशिष्ट रूप से मान्य है।

इस कपालवेध के अनुपालनानुसार ही समस्त एकादशी-महाद्वादशी व्रतोपवास, मासोपवास एवं भगवद्भागवज्जयन्ति पाटोत्सवादि सम्पन्न हो सकें इसके लिए श्रीऔदुम्बर संहिता, स्वधर्मामृत सिन्धु, वैष्णवधर्म सुरद्रुम मञ्जरी आदि ग्रन्थों का निर्माण साम्प्रदायिक विद्वानों ने किया है जिनके अनुसार ही सम्प्रदाय के सभी स्थानों तथा उनसे सम्बद्ध वैष्णव सभी व्रतोपवास सम्पन्न करते आये हैं।

एक विचलन सामने आया है कि संप्रदाय के इस कपालवेध सिद्धान्त का हनन करते हुए भगवद्जयंतियों की तिथियों में व्यतिक्रम किया जा रहा है। विगत वर्षों में श्रीराम नवमी, श्रीनृसिंह चतुर्दशी, आदि कई उत्सवों को कपालवेध मत के विरुद्ध मनाया गया जो शास्त्र विरुद्ध होने से निष्फल रहा। अतः इस दोष के परिहारार्थ "श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय" का प्रकाशन श्रीनिम्बार्कपरिषद् द्वारा किया जा रहा है। इस तिथि पत्रक में जयपुर के सूर्योदय से तिथियों के मान की सारिणी घटी-पल एवं घण्टा - मिनट सहित दी जा रही हैं तथा तद्तिथि मानानुसार व्रतोत्सव अंकित किये गये हैं।

इस महनीय कार्य हेतु श्रीनिम्बार्कपरिषद् साधुवाद की पात्र है, श्रीसर्वेश्वर प्रभु संस्था को उत्तरोत्तर उन्नति प्रदान करे।

महन्त श्रीवृन्दावनदास शास्त्री
श्रीअलीमाधुरी कुटी, रमण रेती, श्रीवृन्दावन
महामन्त्री अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्क महासभा
प्रन्यासी अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ

सर्वज्ञो जगतः कर्ता भक्ताभीष्टप्रदो विभुः ।
यः केशवं नमामस्तं शरण्यं भक्तवत्सलम् ॥
अगाधबोधमाचार्य्यं निम्बादित्यं जगद्गुरुम् ।
ब्रह्मविद्योपदेष्टारं सततं प्रणमाम्यहम् ॥

***

"वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः ।" [भा० 6/1/40]

वेद प्रतिपादित नियमों के पालन करने का नाम धर्म और उसके विपरीताचरण का नाम ही अधर्म है । धर्माचरण के निर्णय हेतु "तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ" इस भगवद्वाक्यानुसार एक मात्र शब्द (शास्त्र) ही प्रमाण है।

व्रत उपवास भी धर्माचरण का ही एक प्रधान अंग है। इसके पालन करने से प्रायः धर्म के अन्य समस्त लक्षणों का पालन हो जाता है। विशिष्ट पर्व दिवस पर विशिष्ट नियमों के पालन का नाम व्रतोपवास है। पापों से उपावृत्त (पृथक्) होकर अर्थात् समस्त भोगों से रहित होकर, गुणों के साथ वास करने का नाम उपवास है। इसी भावनानुसार भगवान् की सेवा आराधना, एकादशी, महाद्वादशी, श्रीरामनवमी – जन्माष्टमी आदि महोत्सवों का विधान श्रीआद्याचार्य श्रीनिम्बार्काचार्य प्रभु ने अपने सदाचारप्रकाश नामक ग्रन्थ में किया है और उसी का आश्रय लेकर श्रीऔदुम्बर संहिता, स्वधर्मामृत सिन्धु, वैष्णवधर्म सुरद्रुम मञ्जरी , श्रीनिम्बार्क व्रत निर्णय आदि ग्रन्थों का निर्माण साम्प्रदायिक विद्वानों ने किया है।

जैसे देवताओं में विष्णु प्रधान हैं, वैसे ही व्रतों में भी एकादशी व्रत प्रधान है। एकादशी और भगवत् महोत्सव एक व्रत में गिने जाते हैं। जब तक एकादशी और भगवत् महोत्सव हों तब तक उपवास रखना चाहिये। दशमी को असुरों तथा एकादशी में देवताओं की उत्पत्ति हुई है, दशमी में भी अर्धरात्र का समय असुरों की उत्पत्ति का कारण है। अतः एकादशी में दशमी का वेध निषिद्ध माना जाता है। स्पर्श, संग, शल्य और वेध इन

चतुर्विध वेधों में प्रथम स्पर्श वेध को ही अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य जी ने स्वीकार किया है। आपने प्रत्येक एकादशी एवं भगवद्भागवज्जयन्तियों में तिथि का उदय काल अर्धरात्र अर्थात् 45 घटी पर ही माना है। अर्धभाग का नाम है कपाल। रात्रि के अर्द्धभाग के वेध को स्वीकार करने से इस स्पर्श वेध का ही नाम कपाल वेध है।

उदय व्यापिनी ग्राह्या कुले तिथिरुपोषणे।
निम्बार्को भगवान्येषा वाञ्छितार्थ प्रदायकः॥

जिस कुल में भगवान् श्रीनिम्बार्क वाञ्छित फल दाता (उपास्य) हों उस सम्प्रदाय में व्रत उपवास आदि धर्म कार्यों में उदय व्यापिनी तिथि का ग्रहण करना चाहिये। उदय व्यापिनी का तात्पर्य है --तिथि का उदय, वह अर्धरात्रि के अनन्तर होता है। आपके मत में दशमी यदि पल मात्र भी 45 घटी से अधिक हो तो अगली तिथि एकादशी का स्पर्श अर्थात् वेध कर लेती हैं तो उस एकादशी का त्याग करके वह उपवास द्वादशी में करना चाहिये।

अर्धरात्रमति क्रम्य दशमी दृश्यते यदि।
तदाह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत्॥
[कूर्मपुराण]

जो अर्द्धरात्र का अतिक्रमण (उल्लंघन) कर अर्थात् 45 घटी के उपरान्त दशमी दीख पड़े तो निश्चय ही उस एकादशी को छोड़ कर द्वादशी में व्रत करे।

प्रायः तिथियाँ दो प्रकार की होती हैं - शुद्धा और विद्धा, शुद्ध तिथि वह कहलाती है जिसमें पूर्व तिथि का सम्पर्क न हो, जिसमें पूर्वापर तिथियों का सम्पर्क हो वह विद्धा कहलाती है। विद्धा तिथि भी दो प्रकार की होती हैं, एक पूर्व विद्धा, दूसरी पर विद्धा, वैष्णव धर्म शास्त्रकारों ने पूर्व विद्धा तिथि को त्यागने का आदेश दिया है, और उसे वैष्णवों का लक्षण (स्वरूप) माना है--

"पूर्वविद्धतिथिस्त्यागो वैष्णवस्य हि लक्षणम्"

इस नारद पंचरात्र के प्रमाणानुसार पूर्व विद्धा तिथि का परित्याग ही वैष्णव का लक्षण है। अत: व्रतोपवासादि में पूर्वविद्धा तिथि छोड़ पर विद्धा तिथि ही ग्राह्य है। 'स्वधर्मामृत सिन्धु, वैष्णव धर्म सुरद्रम मञ्जरी , औदुम्बर संहिता' आदि ग्रन्थों में इसे विशद रूप में वर्णित किया गया हैं।

प्राय: कई एक स्थानों से अनेक पंचांग निकलते है अपने – अपने स्थान की गणना के अनुसार उनके तिथियों के घटीमान में भिन्नता रहती है। मान लीजिये एक पंचांग में दशमी तिथि का घटीमान 44 घटी है तो दूसरे पंचांग के अनुसार दशमी 46 घटी है, पहले के अनुसार से तो एकादशी दशमी विद्धा नहीं है, अत: एकादशी में व्रत उपवास होना चाहिये परन्तु दूसरे पंचांगानुसार जिसमें कि दशमी 46 घटी हैं उसके अनुसार से एकादशी दशमी विद्धा है, अत: एकादशी में व्रत न होकर द्वादशी में ही होना चाहिये। ऐसी स्थित में भावुक सज्जनों को यह सन्देह हो जाता है कि व्रत उपवास एकादशी में करना चाहिये या द्वादशी में। इस संदेह की निवृत्ति इस प्रकार कर लेना चाहिये कि क्षेत्र-प्रान्त में जो पंचांग प्रचलित हो अर्थात् वहाँ जिस पंचांग को अधिक लोग मानते हों उसी बहुमान्य पंचांगानुसार विद्धा अथवा शुद्धा एकादशी का निर्णय करना चाहिये -

बहुवाक्यविरोधेन संदेहो जायते यदा।
उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यांतु पारणम्॥

इस नारदजी के वचनानुसार बहुवाक्य विरोध होने पर द्वादशी में उपवास करके त्रयोदशी में पारणा करना चाहिये।

आठ-महाद्वादशी

उन्मीलिनी वञ्जुलिनी त्रिस्पर्शा पक्षवर्द्धिनी।
जया च विजया चैव जयन्ती पापनाशिनी॥
द्वादश्योऽष्टौ महापुण्याः सर्वपापहरा द्विज॥ [ब्रह्मवर्त]

उन्मीलिनी, वञ्जुलिनी, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और पापनाशिनी ये आठ महाद्वादशियां पुण्यप्रद हैं और सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं। इनका योग जानने का क्रम निम्नप्रकार से हैं -

1. जैसे एकादशी पूर्ण हो दूसरे दिन भी कुछ एकादशी हो, तो वह महाद्वादशी 'उन्मीलिनी' कहलाती है।

   एकादशी तु सम्पूर्ण वर्द्धते पुन रेव साः।
   द्वादशी नच वर्द्धते कथितोन्मीलिनीति सा॥

2. एकादशी तथा द्वादशी सम्पूर्ण हो और फिर त्रयोदशी को भी कुछ अवशिष्ट हो, तो वह महाद्वादशी 'वञ्जुलिनी' कही जाती है।

   द्वादश्येव विवर्द्धेत् न चैवैकादशी यदा|
   वंजुलिनीति भृगु श्रेष्ठ कथिता पाप नाशिनी॥

3. प्रातःकाल एकादशी हो फिर द्वादशी का क्षय होकर रात्रि शेष में त्रयोदशी हो, तो वह महाद्वादशी 'त्रिस्पर्शा' कहलाती है।

   अरुणोदम आद्या स्यात द्वादशी सकलं दिवं।
   अन्ते त्रयोदशी प्राप्त त्रिस्पर्शा सा हरि प्रियाः॥

4. अमावस्या या पूर्णिमा तिथि यदि दो हो जाय तो वह महाद्वादशी 'पक्षवर्द्धिनी' नाम से कही जाती है।

   कुहूराके यदा वृद्धिं प्रयाते पक्षवर्द्धिनी।
   विहायैकादशीं तत्र द्वादशीं समुपोषयेत॥

5. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त हो तो वह 'जया' नाम महाद्वादशी होती है।

द्वादश्यां तु शिते पक्षे यदा ऋक्ष पुनर्वसुः।
नाम्ना सातु जयाख्याता सर्व पाप हरा तिथिः॥

6. किसी भी मास के कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त होतो वह 'विजया' नामकी महाद्वादशी कही जाती है।

शुक्ला वा यदि वा कृष्णा द्वादशी श्रवणान्विता।
विजया द्वादशी ज्ञेया सर्व पाप हरा शुभा॥

7. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो, तो वह 'जयन्ती' नाम की महाद्वादशी कहलाती है।

यदा च शुक्ला द्वादश्यां प्रजा पत्यं प्रजायते।
जयन्ती नाम सा गेया सर्व पाप हरा तिथि॥

8. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो वह 'पापनाशिनी' महाद्वादशी कहलाती है।

यदा च शुक्ल द्वादश्यां पुष्यं भवति कर्हिचित्।
तदा सातु महा पुण्या कथिता पाप नाशनी॥

उपर्युक्त प्रथम चार महाद्वादशी तो तिथियों के योग से बनती है और शेष चार महाद्वादशी नक्षत्रों के योग से आती हैं, अतः इन आठों महाद्वादशियों में से किसी का भी योग आ जावे तो शुद्धा वेध रहित एकादशी को भी छोड़कर महाद्वादशी में व्रत करना चाहिये। यथा-

"शुद्धाप्येकादशी त्याज्या द्वादश्या समुपोषणम्"

ऐसा ब्रह्मवैवर्त और पद्मपुराणादि का वचन है। तथा वैष्णवधर्मसुरद्रुम-मञ्जरी में आचार तिलक ग्रन्थ से ब्रह्मवैवर्तपुराण का वचन —

पर्वाच्युतजयावृद्धौ ईश दुर्गान्तकक्षये।
शुद्धाप्येकादशी त्याज्या द्वादश्यां समुपोषणम्॥

का उद्धरण देते हुए कहा गया है की पर्व नाम पूर्णिमा, एवं अमावस्या, अच्च्युत नाम द्वादशी, जया नाम त्रयोदशी इनमें से किसी एक की वृद्धि हो और ईश नाम अष्टमी, दुर्गा नाम नवमी, अन्तक नाम दशमी इनमें से किसी एक का क्षय हो तो शुद्धा एकादशी को छोड़कर द्वादशी में व्रत करें।

पारणा निर्णय – जब एकादशी पूर्वतिथि से विद्धा हो अथवा एकादशी बढ़ी हो; तब द्वादशी में व्रत और त्रयोदशी में पारणा करें। जब एकादशी विद्धा हो और दूसरे दिन बढ़ी नहीं हो तब शुद्ध द्वादशी में व्रत और त्रयोदशी में पारणा करना चाहिये। जब त्रयोदशी में द्वादशी दो घडी हो तब द्वादशी में ही पारणा करें द्वादशी का उल्लंघन ना करें। स्कन्द पुराण का वचन है – जब पारणा के दिन बहुत थोड़ी भी द्वादशी हो तब अरुणोदय के उषः काल में प्रातः मध्याहन काल के दोनों कर्म कर लें। यदि द्वादशी घडी भर भी ना हों तो त्रयोदशी में पारणा करना चाहिये।

श्रीभगवद्‌जयन्ती पाटोत्सवादि में भी व्रत उपवास रखना वैष्णवों का मुख्य कर्तव्य है। श्रीनिम्बार्क मतानुयायी वैष्णवों को इन जयन्तियों में भी यही कपाल वेध पालन करना चाहिये जैसे भाद्रपद कृष्ण पक्ष की सप्तमी यदि 45 घटी से ऊपर हो, तो श्रीकृष्णजन्माष्टमी महोत्सव दूसरे दिन अष्टमी को न मानकर यह महोत्सव नवमी को मानना चाहिये और उसी दिन व्रत उपवास रखना चाहिये। कारण कि वह अष्टमी कपाल वेध मतानुसार सप्तमी विद्धा है अतः उसे छोड़कर नवमी को यह

उत्सव करना चाहिये। भले ही अष्टमी के दिन बुधवार एवं रोहिणी नक्षत्र आदि- योग भी क्यों न पड़े हों पर सप्तमी विद्धा होने से उसे छोड़ कर नवमी ही मान्य है। इसी प्रकार अन्य तीनों जयन्तियाँ भी कपाल वेध मतानुसार यदि पूर्व तिथियों से विद्धा हों तो श्रीराम नवमी चैत्र शुक्ल दशमी को, श्रीनृसिंह जयन्ती वैशाख शु० पूर्णिमा को, श्रीवामन जयन्ती, भाद्रपद शु० त्रयोदशी को मानना चाहिये। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं होना चाहिये।

यह व्रतोत्सव श्रीसूर्यसिद्धान्तीय गणना तथा जयपुर नगर के अक्षांश देशांश पर निर्मित हुआ है। तिथ्यादि के मान भारतवर्ष के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा अनुमोदित राजस्थान के एकमात्र सूर्य-सिद्धान्तीय श्रीसर्वेश्वर-जयादित्यपञ्चाङ्ग के अनुसार है-, जो श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा स्वीकृत कपालवेध सिद्धान्त के सर्वथा अनुकूल सिद्ध है।
अत्यन्त सावधानी रखते हुए भी कोई त्रुटी यदि रह गई है तो सूचित करने की कृपा अवश्य करें।

अमित शर्मा
संपादक

ठाकुर श्री सरसबिहारी जी सरकार

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

रुक्मिणीसत्यभामाव्रजस्त्रीविशिष्टः श्रीभगवान
पुरुषोत्तमो वासुदेवः साम्प्रदायिभिर्वैष्णवैः सदोपासनीय

श्रीनिम्बार्क परिषद्
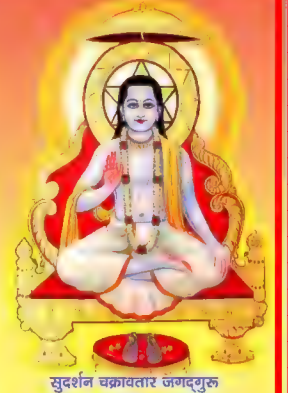
सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरू
भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीनिम्बार्काब्द 5116- 5117 वि० सं० 2078 राक्षस नाम संवत्सर, ईस्वी 2021 – 2022 का श्रीसूर्यसिद्धान्तीय गणना आधारित श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा स्वीकृत कपालवेध सिद्ध "श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय"

चैत्र संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
चैत्र शुक्ल पक्ष	1	मंगल	07.08	09.02	13	अप्रै०	विक्रम नववर्ष प्रारम्भ, श्रीनवरात्र घट स्थापनादि प्रातः 09:01 तक, मिश्री कालीमिर्चयुत नव निम्बदलार्पण, पञ्चाङ्ग श्रवण एवं श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकेशवभट्टाचार्य जी का पाटोत्सव
	2	बुध	12.12	11.02	14	अप्रै०	सिंजारा
	3	गुरु	17.26	13.07	15	अप्रै०	गणगौर व्रतोत्सव, श्रीमत्स्यावतार जयन्ती
	4	शुक्र	22.24	15.05	16	अप्रै०	
	5	शनि	26.43	16.48	17	अप्रै०	
	6	रवि	30.04	18.07	18	अप्रै०	श्रीयमुना जयन्ती, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपुरुषोत्तमाचार्य जी का पाटोत्सव
	7	सोम	32.17	18.59	19	अप्रै०	
	8	मंगल	33.14	19.21	20	अप्रै०	
	9	बुध	32.54	19.12	21	अप्रै०	श्रीरामनवमी महोत्सव
	10	गुरु	31.19	18.33	22	अप्रै०	नवरात्र उत्थापन
	11	शुक्र	28.36	17.27	23	अप्रै०	श्रीकामदा एकादशी व्रत
	12	शनि	24.54	15.57	24	अप्रै०	दमनोत्सव
	13	रवि	22.21	14.07	25	अप्रै०	
	14	सोम	15.07	12.01	26	अप्रै०	
	15	मंगल	09.25	09.43	27	अप्रै०	पूर्णिमा पुण्य, श्रीहनुमान् जयन्ती, वैशाख स्नान प्रारम्भ

वैशाख संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
वैशाख कृष्ण पक्ष	1	बुध	03.25	07.18	28	अप्रै०	
	2		53.53	28.51			
	3	गुरु	51.20	26.27	29	अप्रै०	
	4	शुक्र	45.41	24.10	30	अप्रै०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्मनाभभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव (03 पूर्व विद्धा होने से आज)
	5	शनि	40.32	22.06	1	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	6	रवि	36.06	20.19	2	मई	
	7	सोम	32.30	18.52	3	मई	बाबा श्रीमाधुरीशरणजी का जन्मोत्सव, श्रीअलिमाधुरी कुटी, श्रीवृन्दावन
	8	मंगल	29.55	17.49	4	मई	
	9	बुध	28.30	17.14	5	मई	
	10	गुरु	28.19	17.09	6	मई	
	11	शुक्र	29.24	17.34	7	मई	श्रीवरूथिनी एकादशी, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
	12	शनि	31.44	18.29	8	मई	
	13	रवि	35.11	19.52	9	मई	
	14	सोम	39.32	21.35	10	मई	व्रजविदेह चतु:सम्प्रदाय श्रीमहंत धनञ्जयदास जी काठिया तिरोभाव तिथि
	30	मंगल	44.29	23.33	11	मई	वैशाखी अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा, श्रीशुकदेव जयन्ती
वैशाख शुक्ल पक्ष	1	बुध	49.37	25.36	12	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी की 93 वीं जयन्ती
	2	गुरु	54.30	27.33	13	मई	
	3	शुक्र	58.45	29.14	14	मई	अक्षय तृतीया युगादि तिथि
	4	शनि	60.00	अहोरात्र	15	मई	अक्षय तृतीया निमित्त भगवान् के चन्दन का शृङ्गार, सत्तू, ऋतुफल एवं शीतल पदार्थ समर्पण, भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती, ठाकुरजी श्रीगोपालजी महाराज, जूसरी-मकराना का पाटोत्सव (तृतीया पूर्वविद्धा होने से आज)
	4	रवि	02.04	06.32	16	मई	
	5	सोम	04.14	07.24	17	मई	श्रीमदशंकराचार्य जयन्ती
	6	मंगल	05.08	07.45	18	मई	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती
	7	बुध	04.45	07.35	19	मई	श्रीगंगा सप्तमी, गंगा पूजन
	8	गुरु	03.09	06.56	20	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीविलासाचार्यजी का पाटोत्सव
	9	शुक्र	00.24	05.50	21	मई	श्रीजानकी नवमी महामहोत्सव
	10		56.14	28.19			
	11	शनि	52.03	26.29	22	मई	
	12	रवि	46.46	24.22	23	मई	श्रीमोहिनी एकादशी व्रत, (ईशदुर्गान्तकक्षये वचनानुसार 10 क्षय होने से), श्रीहितहरिवंश महाप्रभु जयन्ती
	13	सोम	41.01	22.03	24	मई	द्वाराचार्य श्रीमुकुन्ददेवाचार्यजी का पाटोत्सव (12 विद्धा होने से आज)
	14	मंगल	34.58	19.38	25	मई	श्रीनृसिंह जयन्ती
	15	बुध	28.48	17.09	26	मई	श्रीकूर्मावतार जयन्ती, श्रीबुद्धावतार पूर्णिमा, पूर्णिमा पुण्य, वैशाख स्नान पूर्ति

ज्येष्ठ संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	1	गुरु	22.45	14.44	27	मई	जलसेवा प्रारम्भ, आज से इस माह की पूर्णिमा पर्यन्त पूरे मास शीतल सुगन्धित जलशय्या पर भगवान की शयन सेवा
	2	शुक्र	17.01	12.26	28	मई	श्रीनरहरिदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	3	शनि	11.47	10.20	29	मई	
	4	रवि	07.14	08.30	30	मई	
	5	सोम	03.31	07.01	31	मई	
	6	मंगल	00.49	05.56	1	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीवामनभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	7		58.26	29.18			
	8	बुध	58.55	29.10	2	जून	
	9	गुरु	59.52	29.33	3	जून	
	10	शुक्र	60.00	अहोरात्र	4	जून	
	10	शनि	02.04	06.25	5	जून	
	11	रवि	05.22	07.44	6	जून	श्रीअपरा एकादशी व्रत
	12	सोम	09.36	09.26	7	जून	महन्त श्रीगोविन्दास जी महाराज का स्मृति महोत्सव श्रीराधाकृष्ण धाम, श्रीनृसिंह कुटी अजयराजपुरा जयपुर
	13	मंगल	14.26	11.22	8	जून	
	14	बुध	19.30	13.23	9	जून	
	30	गुरु	24.20	15.19	10	जून	अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	1	शुक्र	28.33	17.01	11	जून	
	2	शनि	31.51	18.20	12	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का 79 वां पाटोत्सव
	3	रवि	34.01	19.12	13	जून	
	4	सोम	34.56	19.34	14	जून	दिग्विजयी श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	5	मंगल	34.34	19.25	15	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	6	बुध	32.59	18.47	16	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	7	गुरु	30.14	17.41	17	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीस्वरूपाचार्यजी का पाटोत्सव
	8	शुक्र	26.30	16.12	18	जून	
	9	शनि	21.54	14.22	19	जून	श्रीवृन्दावन श्रीजी की बड़ी कुन्ज मन्दिरस्थ भगवान् श्रीआनन्दमनोहर वृन्दावनचन्द्रजी एवं श्रीरूपमनोहर वृन्दावनचन्द्रजी का पाटोत्सव
	10	रवि	16.37	12.15	20	जून	ठाकुरजी श्रीसरसबिहारीजी, श्रीललितकिशोरजी, श्रीराधामुकुन्दबिहारीजी का पाटोत्सव, श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ श्रीराधामाधव भगवान का 255 वां पाटोत्सव , गङ्गा दशमी, ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीसंतदास जी काठिया बाबा आविर्भाव तिथि
	11	सोम	10.51	09.57	21	जून	श्रीनिर्जला एकादशी व्रत
	12	मंगल	04.45	07.30	22	जून	
	13		53.47	29.01			
	14	बुध	42.27	26.35	23	जून	
	15	गुरु	46.37	24.16	24	जून	पूर्णिमा, ज्येष्ठाभिषेक - जलसेवा पूर्ति

आषाढ संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
आषाढ कृष्ण पक्ष	1	शुक्र	41.17	22.08	25	जून	
	2	शनि	36.38	20.17	26	जून	
	3	रवि	32.48	18.45	27	जून	
	4	सोम	29.59	17.37	28	जून	
	5	मंगल	28.17	16.57	29	जून	
	6	बुध	27.48	16.46	30	जून	
	7	गुरु	28.37	17.06	1	जुला०	
	8	शुक्र	30.39	17.55	2	जुला०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्माकरभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	9	शनि	33.50	19.12	3	जुला०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकृष्णभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	10	रवि	37.58	20.51	4	जुला०	
	11	सोम	42.43	22.46	5	जुला०	श्रीयोगिनी एकादशी
	12	मंगल	47.44	24.47	6	जुला०	पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी
	13	बुध	52.34	26.43	7	जुला०	
	14	गुरु	56.48	28.25	8	जुला०	
	30	शुक्र	60.00	अहोरात्र	9	जुला०	पितृ कार्याऽमा
	30	शनि	00.08	05.46	10	जुला०	अमावस्या देव कार्याऽमा
आषाढ शुक्ल पक्ष	1	रवि	02.21	06.40	11	जुला०	
	2	सोम	03.20	07.04	12	जुला०	श्रीरथयात्रा महोत्सव
	3	मंगल	03.03	06.57	13	जुला०	
	4	बुध	01.32	06.21	14	जुला०	
	5		57.21	29.17			
	6	गुरु	55.10	27.49	15	जुला०	
	7	शुक्र	50.38	26.00	16	जुला०	
	8	शनि	45.22	23.55	17	जुला०	
	9	रवि	39.37	21.37	18	जुला०	
	10	सोम	33.31	19.11	19	जुला०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीमाधवाचार्यजी का पाटोत्सव
	11	मंगल	27.18	16.42	20	जुला०	श्रीदेवशयनी एकादशी व्रत
	12	बुध	21.09	14.16	21	जुला०	
	13	गुरु	15.18	11.56	22	जुला०	
	14	शुक्र	09.55	09.47	23	जुला०	
	15	शनि	05.12	07.54	24	जुला०	श्रीगुरुपूर्णिमा, श्रीहंस भगवान् से लेकर समस्त आचार्यों एवं निज गुरुदेव का पूजन

श्रावण संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
श्रावण कृष्ण पक्ष	1	रवि	01.18	06.21	25	जुला०	
	2		57.06	29.11			
	3	सोम	56.37	28.29	26	जुला०	
	4	मंगल	56.02	28.16	27	जुला०	
	5	बुध	56.45	28.34	28	जुला०	
	6	गुरु	58.43	29.21	29	जुला०	
	7	शुक्र	60.00	अहोरात्र	30	जुला०	
	7	शनि	01.48	06.36	31	जुला०	
	8	रवि	05.53	08.15	1	अग०	
	9	सोम	10.37	10.09	2	अग०	
	10	मंगल	15.39	12.10	3	अग०	
	11	बुध	20.31	14.08	4	अग०	श्रीकामिका एकादशी व्रत
	12	गुरु	24.50	15.52	5	अग०	
	13	शुक्र	28.17	17.15	6	अग०	
	14	शनि	30.37	18.11	7	अग०	
	30	रवि	31.43	18.38	8	अग०	श्रीहरियाली अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा, श्रीसरसमाधुरीशरण जी की जयन्ती
श्रावण शुक्ल पक्ष	1	सोम	31.32	18.35	9	अग०	
	2	मंगल	30.08	18.01	10	अग०	सिंजारा
	3	बुध	27.33	17.00	11	अग०	झूलनोत्सव प्रारम्भ, हरियाली तीज, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबलभद्राचार्यजी का पाटोत्सव, श्रीविहारिनदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	4	गुरु	23.57	15.34	12	अग०	
	5	शुक्र	19.29	13.47	13	अग०	श्रीकल्कि जयन्ती
	6	शनि	14.18	11.43	14	अग०	
	7	रवि	08.35	09.27	15	अग०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपीनाथभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता दिवस 75 वां
	8	सोम	02.32	07.02	16	अग०	
	9		53.50	28.34			
	10	मंगल	50.14	26.08	17	अग०	
	11	बुध	44.24	23.48	18	अग०	
	12	गुरु	39.00	21.39	19	अग०	श्रीपवित्रा एकादशी (ईशदुर्गान्तकक्षये वचनानुसार 9 क्षय होने से तथा एकादशी पूर्वविद्धा होने से आज) पवित्रा रोपण
	13	शुक्र	34.16	19.46	20	अग०	
	14	शनि	30.21	18.12	21	अग०	
	15	रवि	27.24	17.02	22	अग०	रक्षाबन्धन दिन में 01:47 से सांय 04:21 तक, पूर्णिमा पुण्य, शुक्ल-कृष्ण-यजुर्वेदी श्रावणी कर्म

भाद्रपद संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	सोम	25.35	16.19	23	अग०	
	2	मंगल	24.59	16.05	24	अग०	
	3	बुध	25.40	16.21	25	अग०	
	4	गुरु	27.36	17.08	26	अग०	
	5	शुक्र	30.42	18.23	27	अग०	श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	6	शनि	34.48	20.02	28	अग०	
	7	रवि	39.34	21.57	29	अग०	
	8	सोम	44.40	24.00	30	अग०	लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण जयन्ती महामहोत्सव
	9	मंगल	49.37	25.59	31	अग०	श्रीनन्द महोत्सव, पलना दर्शन
	10	बुध	54.02	27.46	1	सित०	
	11	गुरु	57.35	29.11	2	सित०	
	12	शुक्र	60.00	अहोरात्र	3	सित०	श्रीअजा एकादशी व्रत (एकादशी पूर्वविद्धा होने से आज), वञ्जुलिनी महाद्वादशी
	12	शनि	00.01	06.10	4	सित०	
	13	रवि	01.14	06.40	5	सित०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	14	सोम	01.11	06.39	6	सित०	कुशोत्पाटनी (कुशग्रहणी) अमावस्या, देवपितृ कार्येऽमा
	30		58.44	30.09			
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	1	मंगल	57.27	29.10	7	सित०	
	2	बुध	53.57	27.47	8	सित०	
	3	गुरु	49.34	26.02	9	सित०	
	4	शुक्र	44.28	24.00	10	सित०	श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीवराह जयन्ती (3 पूर्वविद्धा होने से आज)
	5	शनि	38.50	21.45	11	सित०	श्रीऋषि पञ्चमी, सामवेदी उपाकर्म
	6	रवि	32.51	19.22	12	सित०	श्रीबलदेव जयन्ती
	7	सोम	26.42	16.55	13	सित०	
	8	मंगल	20.38	14.30	14	सित०	श्रीराधा जयन्ती महामहोत्सव, स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	9	बुध	14.49	12.11	15	सित०	श्रीमद्भागवत जयन्ती महोत्सव
	10	गुरु	09.28	10.03	16	सित०	
	11	शुक्र	04.46	08.10	17	सित०	श्रीपद्मा (जलझूलनी एकादशी व्रत) श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपालाचार्यजी का पाटोत्सव
	12	शनि	00.56	06.37	18	सित०	श्रीवामन जयन्ती एवं श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्माचार्यजी का पाटोत्सव
	13		57.07	29.28			
	14	रवि	56.13	28.46	19	सित०	श्रीअनन्त चतुर्दशी,
	15	सोम	55.39	28.33	20	सित०	पूर्णिमा, श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध

आश्विन संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
आश्विन कृष्ण पक्ष	1	मंगल	56.23	28.51	21	सित०	प्रतिपदा का श्राद्ध
	2	बुध	58.22	29.39	22	सित०	द्वितीया का श्राद्ध
	3	गुरु	60.00	अहोरात्र	23	सित०	तृतीया का श्राद्ध
	3	शुक्र	1.30	06.55	24	सित०	चतुर्थी का श्राद्ध
	4	शनि	5.40	08.35	25	सित०	पंचमी का श्राद्ध, गौलोकवासी महन्त श्रीद्वारकादास जी महाराज का आविर्भाव दिवस
	5	रवि	10.31	10.32	26	सित०	षष्ठी का श्राद्ध
	6	सोम	15.42	12.37	27	सित०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	7	मंगल	20.46	14.39	28	सित०	श्रीचतुरचिन्तामणि "नागाजी" महाराज का पाटोत्सव, सप्तमी का श्राद्ध
	8	बुध	25.17	16.28	29	सित०	अष्टमी का श्राद्ध
	9	गुरु	28.57	17.57	30	सित०	नवमी का श्राद्ध
	10	शुक्र	31.31	18.59	1	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीभूरिभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव, दशमी का श्राद्ध
	11	शनि	32.51	19.31	2	अक्टू०	श्रीइन्दिरा एकादशी व्रत
	12	रवि	32.53	19.33	3	अक्टू०	एकादशी, द्वादशी का श्राद्ध
	13	सोम	31.41	19.04	4	अक्टू०	त्रयोदशी का श्राद्ध
	14	मंगल	29.18	18.07	5	अक्टू०	चतुर्दशी का श्राद्ध
	30	बुध	25.53	16.46	6	अक्टू०	अमावस्या, अमावस्या का श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, देवपितृ कार्याऽमा
आश्विन शुक्ल पक्ष	1	गुरु	21.35	15.03	7	अक्टू०	शारदीय नवरात्रारम्भ घट स्थापना 11:35 से 12:20 तक
	2	शुक्र	16.33	13.03	8	अक्टू०	आदिवाणीकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का पाटोत्सव
	3	शनि	10.59	10.50	9	अक्टू०	
	4	रवि	05.04	08.28	10	अक्टू०	
	5		53.58	30.03			
	6	सोम	53.02	27.40	11	अक्टू०	श्रीसरस्वती आवाहन (मूलेषु स्थापन)
	7	मंगल	47.18	25.23	12	अक्टू०	श्रीसरस्वती पूजन (पूर्वाषाढासु पूजनम)
	8	बुध	42.01	23.17	13	अक्टू०	श्रीसरस्वती अर्चनं (उत्तरासु अर्चन)
	9	गुरु	37.23	21.26	14	अक्टू०	सरस्वती विसर्जन (श्रवणेन विसर्जयेत), नवरात्र समाप्त
	10	शुक्र	33.35	19.55	15	अक्टू०	श्रीविजयादशमी, श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा, शमी पूजन, रथयात्रा, नवरात्र उत्थापन, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती
	11	शनि	30.46	18.48	16	अक्टू०	श्रीपापांकुशा एकादशी व्रत
	12	रवि	29.04	18.08	17	अक्टू०	
	13	सोम	28.36	17.57	18	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्यामाचार्यजी का पाटोत्सव
	14	मंगल	29.26	18.18	19	अक्टू०	
	15	बुध	31.32	19.09	20	अक्टू०	शरद् पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्रीसरसदेवजी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान

कार्तिक संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
कार्तिक कृष्ण पक्ष	1	गुरु	34.48	20.28	21	अक्टू०	
	2	शुक्र	39.05	22.11	22	अक्टू०	
	3	शनि	44.03	24.11	23	अक्टू०	
	4	रवि	49.20	26.19	24	अक्टू०	
	5	सोम	54.29	28.23	25	अक्टू०	
	6	मंगल	59.06	30.14	26	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी का पाटोत्सव, तपोमूर्ति संगीताचार्य बाबा श्रीशुकदेव दास जी महाराज की आविर्भाव तिथि (दोनों उत्सव 5 पूर्व विद्धा होने से आज)
	7	बुध	60.00	अहोरात्र	27	अक्टू०	
	7	गुरु	02.48	07.45	28	अक्टू०	
	8	शुक्र	05.26	08.48	29	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	9	शनि	06.49	09.22	30	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्रवणभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	10	रवि	06.55	09.25	31	अक्टू०	
	11	सोम	05.46	08.58	1	नव०	श्रीरमा एकादशी व्रत, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीमाधवभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	12	मंगल	03.26	08.03	2	नव०	श्रीमहावाणीकार रसिकराजराजेश्वर श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी का पाटोत्सव, श्रीधन्वन्तरि जयन्ती,
	13	बुध	00.04	06.43	3	नव०	रूप चतुर्दशी
	14		55.47	29.01			
	30	गुरु	50.52	27.03	4	नव०	अमावस्या, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपमालिका प्रदोषवेलायाम् दीपोत्सव, श्रीराधिकोत्थापन, देवपितृ कार्याऽमा
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1	शुक्र	45.21	24.51	5	नव०	श्रीअन्नकूट महोत्सव, श्रीगोवर्धनपूजा
	2	शनि	39.30	22.31	6	नव०	यम द्वितीया, भाई दूज
	3	रवि	33.30	20.08	7	नव०	ब्रह्मचारी श्रीयुगलशरणजी महाराज, पाटनारायण धाम की आविर्भाव तिथि
	4	सोम	27.34	17.46	8	नव०	
	5	मंगल	21.55	15.32	9	नव०	ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीधनञ्जयदासजी काठिया बाबा आविर्भाव तिथि
	6	बुध	16.44	13.28	10	नव०	
	7	गुरु	12.13	11.40	11	नव०	
	8	शुक्र	08.32	10.13	12	नव०	गोपाष्टमी महोत्सव, गोपूजन, द्वाराचार्य श्रीस्वभूराम देवाचार्यजी जयन्ती महोत्सव
	9	शनि	05.50	09.08	13	नव०	श्रीहंस सनकादि जयन्ती तथा श्रीसर्वेश्वर प्रभु का प्राकट्य दिवस
	10	रवि	04.16	08.32	14	नव०	
	11	सोम	03.57	08.25	15	नव०	श्रीदेव प्रबोधिनी एकादशी
	12	मंगल	04.56	08.49	16	नव०	
	13	बुध	07.11	09.44	17	नव०	ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीसंतदास जी काठिया बाबा तिरोभाव तिथि
	14	गुरु	10.36	11.07	18	नव०	श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत
	15	शुक्र	15.01	12.54	19	नव०	पूर्णिमा, आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का 5117 वां जयन्ती महोत्सव, कार्तिक स्नान पूर्ण

मार्गशीर्ष संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल घ.प.	तिथि समाप्ति काल घ. मि.	दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	1	शनि	20.06	14.56	20	नव०	
	2	रवि	25.29	17.07	21	नव०	
	3	सोम	30.43	19.13	22	नव०	
	4	मंगल	35.23	21.06	23	नव०	
	5	बुध	39.09	22.37	24	नव०	श्रीनिम्बार्क भगवान् का छठी महोत्सव
	6	गुरु	41.47	23.41	25	नव०	
	7	शुक्र	43.10	24.15	26	नव०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	8	शनि	43.16	24.18	27	नव०	श्रीललितकिशोरीदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
	9	रवि	42.07	23.51	28	नव०	
	10	सोम	39.47	22.56	29	नव०	
	11	मंगल	36.24	21.36	30	नव०	श्रीउत्पत्ति एकादशी व्रत
	12	बुध	32.10	19.55	1	दिस०	
	13	गुरु	27.13	17.57	2	दिस०	
	14	शुक्र	21.44	15.46	3	दिस०	
	30	शनि	15.56	13.28	4	दिस०	अमावास्या, देवपितृ कार्याऽमा
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	1	रवि	09.59	11.06	5	दिस०	
	2	सोम	04.08	08.46	6	दिस०	सेतुकाकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	3		54.27	30.33			
	4	मंगल	53.31	28.32	7	दिस०	द्वाराचार्य श्रीउद्धवघमण्डदेवाचार्यजी प्राकट्योत्सव (तृतीया क्षय होने से आज)
	5	बुध	49.07	26.47	8	दिस०	श्रीरामजानकी विवाह महोत्सव
	6	गुरु	45.33	25.22	9	दिस०	ठाकुर श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज का प्राकट्योत्सव (पञ्चमी पूर्वविद्धा होने से आज)
	7	शुक्र	43.00	24.22	10	दिस०	
	8	शनि	41.36	23.49	11	दिस०	
	9	रवि	41.27	23.46	12	दिस०	
	10	सोम	42.36	24.14	13	दिस०	
	11	मंगल	45.01	25.13	14	दिस०	श्रीमोक्षदा एकादशी व्रत एवं श्रीगीता जयन्ती
	12	बुध	48.36	26.39	15	दिस०	श्रीव्यञ्जन द्वादशी, पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी
	13	गुरु	53.09	28.29	16	दिस०	श्रीनारद जयन्ती (12 पूर्व विद्धा होने से आज)
	14	शुक्र	58.20	30.35	17	दिस०	
	15	शनि	63.00	अहोरात्र	18	दिस०	पूर्णिमा व्रत
	15	रवि	03.48	08.47	19	दिस०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकृपाचार्य जी का पाटोत्सव (प्रथम पूर्णिमा पूर्वविद्धा होने से आज)

पौष संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
पौष कृष्ण पक्ष	1	सोम	9.04	10.54	20	दिस०	श्रीरसिकमाधुरीशरण जी की जयन्ती
	2	मंगल	13.44	12.46	21	दिस०	
	3	बुध	17.29	14.17	22	दिस०	
	4	गुरु	20.05	15.20	23	दिस०	
	5	शुक्र	21.25	15.52	24	दिस०	
	6	शनि	21.28	15.54	25	दिस०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	7	रवि	20.15	15.25	26	दिस०	
	8	सोम	17.52	14.29	27	दिस०	
	9	मंगल	14.28	13.07	28	दिस०	
	10	बुध	10.13	11.26	29	दिस०	
	11	गुरु	05.15	09.27	30	दिस०	श्रीसफला एकादशी व्रत, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपालभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	12		54.32	31.16			
	13	शुक्र	53.59	28.57	31	दिस०	
	14	शनि	48.05	26.36	1	जन०	
	30	रवि	42.18	24.17	2	जन०	अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा
पौष शुक्ल पक्ष	1	सोम	36.49	22.06	3	जन०	
	2	मंगल	31.50	20.07	4	जन०	
	3	बुध	27.33	18.24	5	जन०	
	4	गुरु	24.07	17.02	6	जन०	
	5	शुक्र	21.42	16.04	7	जन०	
	6	शनि	20.27	15.34	8	जन०	
	7	रवि	20.27	15.34	9	जन०	
	8	सोम	21.45	16.06	10	जन०	
	9	मंगल	24.19	17.07	11	जन०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनारायणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	10	बुध	28.02	18.36	12	जन०	
	11	गुरु	32.41	20.28	13	जन०	पुत्रदा एकादशी व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ, ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीरामदास जी काठिया बाबा तिरोभाव तिथि
	12	शुक्र	37.57	22.35	14	जन०	श्रीमुकुन्ददृाराचार्य श्रीमाधवदासजी महाराज का अविर्भाव दिवस, गौलोकवासी महन्त श्रीद्वारकादास जी का स्मृति महोत्सव
	13	शनि	43.27	24.46	15	जन०	मकर संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक
	14	रवि	48.41	26.52	16	जन०	
	15	सोम	53.18	28.43	17	जन०	पूर्णिमा

माघ संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
माघ कृष्ण पक्ष	1	मंगल	56.57	30.10	18	जन०	
	2	बुध	59.27	31.10	19	जन०	जगदुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी श्री श्रीजी महाराज का पन्चम निकुन्ज प्रवेशोत्सव
	3	गुरु	60.00	अहोरात्र	20	जन०	
	3	शुक्र	00.43	07.40	21	जन०	
	4	शनि	00.39 58.40	07.38 31.06	22	जन०	
	6	रवि	56.50	30.06	23	जन०	
	7	सोम	53.21	28.43	24	जन०	श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती
	8	मंगल	49.01	26.58	25	जन०	
	9	बुध	44.00	24.58	26	जन०	73 वां राष्ट्रीय गणतन्त्र दिवस
	10	गुरु	38.30	22.45	27	जन०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपेश्वरशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	11	शुक्र	32.42	20.26	28	जन०	श्रीषटतिला एकादशी व्रत
	12	शनि	26.48	18.04	29	जन०	
	13	रवि	21.01	15.45	30	जन०	
	14	सोम	15.34	13.34	31	जन०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबलभद्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव, पितृ कार्याऽमा
	30	मंगल	10.38	11.34	1	फर०	माघी मौनी अमावस्या, देव कार्याऽमा
माघ शुक्ल पक्ष	1	बुध	06.25	09.53	2	फर०	
	2	गुरु	03.03	08.31	3	फर०	
	3 4	शुक्र	00.43 58.49	07.35 31.07	4	फर०	
	5	शनि	59.38	31.08	5	फर०	श्रीसरस्वती पूजन
	6	रवि	60.00	अहोरात्र	6	फर०	श्रीवसन्तोत्सव, भाष्यकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनिवासाचार्यजी एवं जाह्नवीकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीदेवाचार्यजी का पाटोत्सव, गीतगोविन्दकार श्रीजयदेव कवि जयन्ती महोत्सव, श्रीरसिकदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान (5 पूर्व विद्धा होने से आज)
	6	सोम	01.03	07.41	7	फर०	
	7	मंगल	03.41	08.44	8	फर०	
	8	बुध	07.28	10.14	9	फर०	
	9	गुरु	12.09	12.06	10	फर०	
	10	शुक्र	17.25	14.11	11	फर०	
	11	शनि	22.52	16.21	12	फर०	श्रीजया एकादशी व्रत, गौलोकवासी महन्त श्रीगोविन्ददास जी महाराज का जन्मोत्सव
	12	रवि	28.02	18.25	13	फर०	
	13	सोम	32.32	20.12	14	फर०	
	14	मंगल	36.04	21.36	15	फर०	
	15	बुध	38.26	22.32	16	फर०	पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ति

फाल्गुन संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	1	गुरु	39.31	22.57	17	फर०	
	2	शुक्र	39.19	22.51	18	फर०	
	3	शनि	37.52	22.16	19	फर०	
	4	रवि	35.16	21.13	20	फर०	
	5	सोम	31.41	19.46	21	फर०	
	6	मंगल	27.15	17.59	22	फर०	
	7	बुध	22.09	15.55	23	फर०	
	8	गुरु	16.35	13.41	24	फर०	
	9	शुक्र	10.44	11.19	25	फर०	
	10	शनि	04.48	08.56	26	फर०	
	11		54.10	30.36			
	12	रवि	53.30	28.24	27	फर०	श्रीविजया एकादशी व्रत (एकादशी क्षय होने से आज)
	13	सोम	48.34	26.24	28	फर०	
	14	मंगल	44.21	24.42	1	मार्च	श्रीमहाशिवरात्री व्रत
	30	बुध	41.00	23.21	2	मार्च	अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	गुरु	38.42	22.25	3	मार्च	
	2	शुक्र	37.34	21.56	4	मार्च	
	3	शनि	37.41	21.58	5	मार्च	
	4	रवि	39.05	22.31	6	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीविश्वाचार्यजी का पाटोत्सव
	5	सोम	41.44	23.33	7	मार्च	
	6	मंगल	45.30	25.03	8	मार्च	
	7	बुध	50.10	26.53	9	मार्च	
	8	गुरु	55.22	28.57	10	मार्च	
	9	शुक्र	60.00	अहोरात्र	11	मार्च	
	9	शनि	0.46	07.05	12	मार्च	
	10	रवि	05.50	09.05	13	मार्च	
	11	सोम	10.12	10.49	14	मार्च	आमलकी एकादशी
	12	मंगल	13.36	12.09	15	मार्च	
	13	बुध	15.49	13.02	16	मार्च	
	14	गुरु	16.46	13.23	17	मार्च	होलिकापर्व - होलिका दीपनं अर्धरात्र्योत्तर 01:22 पश्चात
	15	शुक्र	16.25	13.14	18	मार्च	पूर्णिमा, धूलिवन्दन (छारंडी)

चैत्र संवत 2078

पक्ष	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		दिनाँक	माह	व्रतोत्सव
			घ.प.	घ. मि.			
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	शनि	14.51	12.35	19	मार्च	दोलोत्सव
	2	रवि	12.08	11.29	20	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगांगलभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	3	सोम	08.26	09.59	21	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	4	मंगल	03.55	08.09	22	मार्च	
	5		54.47	30.04			
	6	बुध	53.02	27.47	23	मार्च	
	7	गुरु	47.07	25.24	24	मार्च	
	8	शुक्र	41.07	22.59	25	मार्च	
	9	शनि	35.16	20.37	26	मार्च	
	10	रवि	29.45	18.24	27	मार्च	
	11	सोम	24.46	16.23	28	मार्च	श्रीपापविमोचिनी एकादशी
	12	मंगल	20.31	14.40	29	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
	13	बुध	17.07	13.17	30	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्यामभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
	14	गुरु	14.46	12.20	31	मार्च	पितृ कार्याऽमा
	30	शुक्र	13.36	11.50	1	अप्रै०	अमावस्या, देव कार्याऽमाविक्रम संवत्सर 2078 पूर्ति

****

सम्पूर्ण वर्ष की एकादशी एवं महाद्वादशी की तालिका

जब महाद्वादशी का योग बने तब शुद्धा एकादशी हो तो भी महाद्वादशी का उपवास करना चाहिये अतः जब महाद्वादशी का योग बना है वहाँ एकादशी के स्थान पर महाद्वादशी का ही उल्लेख किया गया है। तथा अन्य योगों के कारण जब द्वादशी में एकादशी करणीय है वह अंकित किया गया है विशेष विवरण पञ्चांग में देखें।

दिनाँक			वार	तिथि	एकादशी / महाद्वादशी
23	अप्रै.	2021	शुक्र	11	श्रीकामदा एकादशी
7	मई	2021	शुक्र	11	श्रीवरूथिनी एकादशी
23	मई	2021	रवि	12	श्रीमोहिनी एकादशी
6	जून	2021	रवि	11	श्रीअपरा एकादशी
21	जून	2021	सोम	11	श्रीनिर्जला एकादशी
6	जुला.	2021	मंगल	12	पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी
20	जुला.	2021	मंगल	11	श्रीदेवशयनी एकादशी
4	अग.	2021	बुध	11	श्रीकामिका एकादशी
19	अग.	2021	गुरु	12	श्रीपवित्रा एकादशी
3	सित.	2021	शुक्र	12	वन्जुलिनी महाद्वादशी
17	सित.	2021	शुक्र	11	श्रीपद्मा एकादशी
2	अक्टू.	2021	शनि	11	श्रीइन्दिरा एकादशी

दिनाँक			वार	तिथि	एकादशी / महाद्वादशी
16	अक्टू.	2021	शनि	11	श्रीपापांकुशा एकादशी
1	नव.	2021	सोम	11	श्रीरमा एकादशी
15	नव.	2021	सोम	11	श्रीदेव प्रबोधिनी एकादशी
30	नव.	2021	मंगल	11	श्रीउत्पत्ति एकादशी
15	दिस.	2021	बुध	12	पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी
30	दिस.	2021	गुरु	11	त्रिस्पर्शा महाद्वादशी
13	जन.	2022	गुरु	11	पुत्रदा एकादशी
28	जन.	2022	शुक्र	11	श्रीषटतिला एकादशी
12	फर.	2022	शनि	11	श्रीजया एकादशी
27	फर.	2022	रवि	12	श्रीविजया एकादशी
14	मार्च	2022	सोम	11	श्रीआमलकी एकादशी
28	मार्च	2022	सोम	11	श्रीपापविमोचिनी एकादशी

श्रीसनकादि संसेव्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु

श्री सर्वेश्वर अष्टकम्

(श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज विरचित)

सनन्दनाद्यैः परिसेविताय, युग्मस्वरूपेण विराजिताय।
चक्राङ्कितायाऽतिमनोहराय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय॥ १ ॥
श्रीनारदान्तर्हृदि संस्थिताय, मुनीन्द्रनिम्बार्कसुपूजिताय।
सौन्दर्यलावण्यगुणार्णवाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय॥२॥
केशेन्द्रदेवैरभिवन्दिताय, गोपाङ्गनागोकुलजीवनाय।
निजाश्रिताऽतङ्कनिवर्तकाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय॥३॥
राधाहृदागारनिमज्जिताय, निकुञ्जलीलारतिवर्द्धकाय।
कालिन्दिकूले रसलासिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय॥४॥
वृन्दावनश्रीक्षणहर्षिताय, कदम्बकुञ्जान्तशोभिताय।
सखीसहस्रैरनुरञ्जिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय॥५॥
नन्दात्मजायाऽखिलमोहनाय, सर्वैः समाराध्यशुचिस्मिताय।
कृष्णाय पूर्णाय सुकोमलाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय॥६॥
वंशीरवाऽकर्षित श्रीवनाय, हैवङ्गीवीनाऽशननिर्गताय।
श्रीरासलीलारससंप्लुताय नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय॥७॥
गोचारणाऽनारतनैपुणाय, वेदान्तवेद्याय सुलोचनाय।
संसारदावानलमोचनाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय॥८॥

सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं भक्ताभीष्टप्रदायकम्। राधासर्वेश्वराख्येन शरणान्तेन निर्मितम्॥ ९ ॥

****

प्राप्ति स्थल

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी,
गढ़ के सामने, कलवाडा, तह० सांगानेर,
जि० जयपुर, राजस्थान – 302037
मो० 09928024414

*****

श्रीअलिमाधुरी कुटी,
वनविहार, परिक्रमा मार्ग श्रीवृन्दावन, मथुरा (उ० प्र०) 281121

*****

श्रीगोपाल जी का मन्दिर,
जूसरी, मकराना जि० नागौर राजस्थान – 341505

****